मनोज दास

मनोज दास (27 फरवरी 1934 - 27 अप्रैल 2021) एक भारतीय लेखक थे जिन्होंने ओडिया और अंग्रेजी में लिखा था। 2000 में, मनोज दास को सरस्वती सम्मान से सम्मानित किया गया था । उन्हें साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए 2001 में पद्म श्री , भारत का चौथा सबसे बड़ा नागरिक पुरस्कार और 2020 में पद्म भूषण , भारत का तीसरा सबसे बड़ा नागरिक पुरस्कार से *सम्मानित किया गया।*

केंद्र साहित्य अकादमी ने अपना सर्वोच्च पुरस्कार (भारत का सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार भी) यानी साहित्य अकादमी पुरस्कार फेलोशिप प्रदान किया है।

1971 में, लंदन और एडिनबर्ग के अभिलेखागार में किए गए व्यापक शोध के माध्यम से, उन्होंने 1900 के दशक की शुरुआत में श्री अरबिंदो के नेतृत्व में भारत के स्वतंत्रता संग्राम के कम ज्ञात पहलुओं को उजागर किया । इस महत्वपूर्ण योगदान के लिए उन्हें कोलकाता में पहला श्री अरबिंदो पुरस्कार मिला।

गहन समझ की उनकी खोज ने अंततः उन्हें रहस्यवाद की ओर अग्रसर किया, और 1963 से वे पुडुचेरी में श्री अरबिंदो आश्रम के निवासी बन गए। वहाँ अपने समय के दौरान, उन्होंने श्री अरबिंदो अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में अंग्रेजी साहित्य और श्री अरबिंदो के दर्शन का ज्ञान प्रदान किया ।

प्रारंभिक जीवन

दास का जन्म ओडिशा के छोटे से तटीय गाँव बालासोर में हुआ था । उनके पिता मधुसूदन दास [7] ब्रिटिश सरकार के अधीन काम करते थे। उन्होंने कम उम्र में ही लिखना शुरू कर दिया था। उनकी पहली रचना ओडिया में कविता की एक पुस्तक, *सतवदिरा अर्तनदा* 1949 में प्रकाशित हुई जब वे हाई स्कूल में थे। उन्होंने 1950 में एक साहित्यिक पत्रिका, *दिगंत* शुरू की । उन्होंने 1951 में हाई स्कूल से स्नातक किया। उनकी लघु कहानियों का पहला संग्रह *समुद्रार क्षुधा (समुद्र की भूख) उसी वर्ष आया था। कटक कॉलेज में बीए की पढ़ाई के दौरान वे छात्र राजनीति में सक्रिय थे। वे अपने कॉलेज के दिनों में कट्टरपंथी विचारों वाले युवा नेता थे, और अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए एक साल जेल में बिताए थे। 1959 में वे* इंडोनेशिया के बांडुंग में एफ्रो-एशियाई छात्रों के सम्मेलन में एक प्रतिनिधि थे। उन्होंने कटक में अपनी डिग्री पूरी नहीं की। उन्होंने अंततः 1955 में पुरी के सामंत चंद्र शेखर कॉलेज से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। अपने कॉलेज के वर्षों के दौरान, उन्होंने लिखना जारी रखा और एक उपन्यास *जीवनारा स्वाद* , लघु कथाओं का एक संग्रह *विशाखन्यार कहानी* और कविताओं का एक संग्रह *पदध्वनि प्रकाशित किया। अंग्रेजी साहित्य में डिग्री के साथ स्नातक होने के बाद, उन्होंने* रेवेनशॉ कॉलेज से अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। क्राइस्ट कॉलेज (कटक) में एक व्याख्याता के रूप में एक छोटी अवधि के कार्यकाल के बाद , वह पुदुचेरी में श्री अरबिंदो आश्रम में शामिल हो गए।१९६३ से, वे श्री अरबिंदो अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा केंद्र, पुदुचेरी में अंग्रेजी साहित्य के प्रोफेसर रहे हैं।

उन्होंने फकीर मोहन सेनापति , व्यास और वाल्मीकि को शुरुआती प्रभावों के रूप में उद्धृत किया।

संपादक और स्तंभकार के रूप में

दास ने 1985-1989 में चेन्नई से प्रकाशित एक सांस्कृतिक पत्रिका, *द हेरिटेज का संपादन किया।*] यह पत्रिका अब प्रचलन में नहीं है।

उन्होंने भारत के राष्ट्रीय दैनिकों जैसे टाइम्स ऑफ़ इंडिया, द हिंदुस्तान टाइम्स, द हिंदू और *द स्टेट्समैन* में आम जीवन में शाश्वत सत्य की खोज पर कॉलम लिखे।

रचनात्मक लेखन और कहानी-कहानियाँ

दास शायद सबसे अग्रणी द्विभाषी ओडिया लेखक हैं और अपनी अंग्रेजी और ओडिया लघु कथाओं और उपन्यासों दोनों में नाटकीय अभिव्यक्ति के उस्ताद हैं। दास की तुलना आधुनिक ओडिया साहित्य में विष्णु शर्मा से की जाती है, उनकी शानदार शैली और शब्दों के कुशल उपयोग। के लिए और इस तथ्य के लिए कि, वे आधुनिक समय में भारत के सर्वश्रेष्ठ कहानीकारों में से एक हैं।   पिछले कुछ वर्षों में कई शोध विद्वानों ने मनोज दास की रचनाओं पर अपनी डॉक्टरेट थीसिस की है, पी. राजा ऐसा करने वाले पहले विद्वान थे।

राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्थिति

दास ने जिन अन्य महत्वपूर्ण पदों को संभाला उनमें साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 1998-2002 में जनरल काउंसिल के सदस्य सिंगापुर सरकार के शिक्षा मंत्रालय में लेखक-सलाहकार ' 1983-85 शामिल हैं। वे चीन (1999) *में* लेखकों के भारतीय प्रतिनिधिमंडल के नेता थे।

पुरस्कार

- ओडिशा साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1965 और 1987
- केन्द्र साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1972
- सरला पुरस्कार, 1981
- विशुबा पुरस्कार, 1986
- साहित्य भारती पुरस्कार, 1995
- सरस्वती सम्मान , 2000;
- सर्वश्रेष्ठ कहानी के लिए उड़ीसा राज्य फिल्म पुरस्कार 2001
- पद्म श्री , 2001
- पद्म भूषण . 2020
- साहित्य अकादमी फेलोशिप , 2006
- अतीबडी जगन्नाथ दास पुरस्कार , 2007
- एनटीआर साहित्य पुरस्कार, 2013
- अमृता कीर्ति पुरस्कार , 2013
- वेद व्यास सम्मान
- मिस्टिक कलिं

चयनित कार्य

उपन्यास

- *द एस्केपिस्ट* , 2001 [29]
- *तन्द्रालोकरा प्रहरी* , 2000
- *आकाशरा इसरा* , 1997
- *अमृता फला* , 1996 (सरस्वती सम्मान)
- *ए टाइगर एट ट्वाइलाइट* , 1991
- *बुलडोजर और वयस्कों के लिए दंतकथाएँ और कल्पनाएँ*, (1990)
- *चक्रवात* , 1987
- *प्रभंजना*
- *गोधुलीरा बाघा*
- *कनक-उपत्यकार कहानी*
- *अमृत फल*
- *शेष तांत्रिकरा संधानरे*

लघु कहानी संग्रह

- *उपकथा शतक*
- *अबू पुरुषा*
- *सेसा बसंतरा चिट्ठी* , 1966
- *मनोज दासंका कथा ओ कहानी* , 1971
- *धूमभ दिगंत ओ अन्या कहानी* , 1971
- *मगरमच्छ की औरत: कहानियों का संग्रह* , 1975
- *मनोज-पंच-बीमशती* , 1977
- *डूबी हुई घाटी और अन्य कहानियाँ* , 1986
- *फेयरवेल टू ए घोस्ट: लघु कथाएँ और एक लघु उपन्यास* , 1994
- *द लीजेंड ऑफ द गोल्डन वैली* , 1996
- *समुद्र-कुलारा एक ग्राम (बाल्य स्मृति)* , 1996
- *आरण्यक* ; (*अरण्यक* , 1994 से रूपांतरित)
- *भिन्ना मनीषा ओ अन्या कहानी*
- *अबुपुरूषा ओ अन्या कहानी*

- *लक्ष्मीरा अभिसार*
- *अबोलाकरा कहानी*
- *अरण्य उल्लाशा*
- *चयनित कथा साहित्य* ,
- *इंद्रधनुष का पीछा करते हुए: एक भारतीय गांव में बढ़ते हुए* , 2004

यात्रा

- *केता दिगंत (भाग I)*
- *केता दिगंत (भाग -II)*
- *अन्तरंग भारत (भाग I)* (मेरा छोटा भारत)
- *अन्तरंग भारत (भाग II)*
- *दुरा-दुरंतारा*
- *अदुरा बिदेश – 2004*

कविता

- *तुम्हारा गाना ओ अन्यान्य कबीता* , 1992
- *कबिता उत्कल*

इतिहास और संस्कृति

- *भरतार ऐतिह्य: शतके प्रश्नार उत्तर* ,1999
- *मनोज दास परिबेसिता उपकथा शतक (रहस्यवादियों द्वारा कही गई कहानियाँ)* , 2002
- *महाकालरा प्रहेलिका ओ अन्याणा जिज्ञासा* , 2006
- *जिबाना जिंजनासा ओ स्मारक स्टाबाका*
- *प्रज्ञा प्रदीपिका*